उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में जैसे, नाभिकीय ऊर्जा का शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए प्रयोग, शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए बाह्य अंतरिक्ष की खोज और उपयोग, लेसर्स तथा लेसर प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान, विकास और डिजाइन बनाना, नये ढंग के यात्री विमान और सूचना प्रौद्योगिकी। उन्होंने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग के औद्योगिक और वाणिज्यिक प्रवर्तन को तेज करने की जरूरत है।

15. दोनों पक्षों ने जनवरी, 1993 में नई दिल्ली में सम्पन्न अन्तर-सरकारी रक्षा-सहयोग करार के महत्व की पुन:पुष्टि की और इस बात पर सहमति व्यक्त की कि वे अपने सैन्य-तकनीकी सहयोग को और बढ़ाने के प्रयास जारी रखेंगे जिसमें संयुक्त उत्पादन की स्थापना भी शामिल है जिसका लक्ष्य अन्य बातों के साथ-साथ तीसरे देशों में निर्यात करना भी है। उन्होंने यह बात भी दोहराई कि उनका सैन्य सहयोग किसी तीसरे देश के खिलाफ नहीं है।

16. दोनों पक्ष मानव संसाधन विकास में सहयोग को बढ़ाने तथा एक देश के लोगों के दूसरे देश के लोगों के साथ सम्पर्कों को विशेषकर संस्कृति, शिक्षा, कला, सूचना, पर्यटन और खेल-कूद के क्षेत्र में, सुविधाजनक बनाने को बहुत महत्व देते हैं। वे 1993 में हस्ताक्षरित सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और अन्य द्विपक्षीय प्रबंधों के अन्तर्गत इन क्षेत्रों में ठोस उपाय करेंगे।

17. अपने संबंधों का गत्यात्मक और व्यापक विकास करने के साझा उद्देश्य से दोनों पक्षों ने बहुवादी राज्यों के हितों की रक्षा तथा भारत और रूसी परिसंघ के बीच सहयोग को और विकसित तथा सघन करने की घोषणाओं पर, शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए बाह्य अंतरिक्ष के अन्वेषण और प्रयोग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा से संबद्ध करारों पर और मौसम विज्ञान तथा मानकीकरण और मापविज्ञान और प्रमाणीकरण के संबंध में समझौता ज्ञापनों पर 17 सितंबर 1992 के अन्तर-सरकारी करार की अवधि विस्तार से संबद्ध प्रोतोकोल तथा भारत-रूसी विमान उद्यम की स्थपना से संबंध पर हस्ताक्षर किए। उन्होंने यथाशीघ्र पारस्परिक पूंजी-निवेश के संवर्धन एवं परिरक्षण, विमान सेवा तथा व्यापारिक जहाजरानी के संबंध में भी समझौते करने की अपनी मंशा जाहिर की।

18. मास्को में भारत-रूस शिखर सम्मेलन के परिणामों से उच्चतम स्तर पर द्विपक्षीय राजनीतिक बातचीत के लाभप्रद और संरचनात्मक स्वरूप की तथा इसे नियमित आधार पर जारी रखने की आवश्यकता की पुन: पुष्टि हुई। इस बातचीत को जारी रखने और द्विपक्षीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्रियाकलाप से भारत गणराज्य और रूसी परिसंघ के बीच बहुमुखी सहयोग संवर्चित होगा जिससे एशिया और विश्व में शांति और स्थिरता को बहुत योगदान मिलता है।

19. मास्को में आज, 30 जून 1994 को हिन्दी, रूसी और अंग्रेजी भाषाओं में दो-दो मूल प्रतियों में सम्पन्न हुआ, ये सभी पाठ समान रूप से प्रमाणिक हैं।

| (हस्ता०) | (हस्ता०) |
|---|---|
| भारत गणराज्य | रूसी परिसघं के |
| के प्रधान मंत्री | राष्ट्रपति |

**Iranian President's visit to Lucknow**

7097. SHRI K.R. MALKANI: Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that during Mr. Rafsanjani's visit to Lucknow, the entire route from the airport to the Imambara was decked with Iranian flags only with and the Indian tricolour was nowhere in sight; and

(b) if so, the action taken in the matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI R.L. BHATIA): (a) According to information available, on April 18, 1995 private bodies in Lucknow would seem to have decked the airport premises as well as the routes to the Raj Bhawan and Imambara with the national flags of India and Iran.

(b) Does not arise.

**Changes in Pressler Law**

7098. SHRI O.P. KOHLI: Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether Government's attention has been drawn to the newsitem captioned "Clinton Government to seek changes to Pressler law" which appeared in the Indian Express dated the 6th April, 1995;

(b) if so, the reaction of Government thereto?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI R.L. BHATIA): (a) Yes, Sir.

(b) Government have conveyed to the US Government that although the Pressler Amendment was a bilateral issue between the US and Pakistan, the transfer of sophisticated and high performance weapons systems to Pakistan would adversely affect India's security and would compel India to take all steps necessary to counter this.

**Press conference of the Uttar Pradesh Chief Minister at High Commission in London**

7099. SHRI SATISH PRADHAN: Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a press conference was arranged at the Indian High Commission in London which was addressed by Uttar Pradesh Chief Minister in the last week of April, 1995;

(b) whether he had criticized some recognised political parties of the country and their leaders in his press conference and had also talked about setting up of a 'fighting army' and the 'frightful war' against the majority community of India;

(c) if so, whether Government have asked the Indian High Commission in London to send a text of the press conference addressed by Uttar Pradesh Chief Minister;

(d) if so, whether Government propose to lay the text on the Table of the House, and

(e) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI R L. BHATIA): (a) to (c) In keeping with normal practice during visits by Indian dignitaries, a press conference was arranged for the UP Chief Minister on 28 April, 1995, at India House in London at his request. Our High Commissioner or other officials of the High Commission did not participate in the press conference, nor was any text of the UP Chief Minister's remarks at the press conference made available to them.

(d) and (e) Does not arise.

**Nepalese Prime Minister's proposal for record keeping along borders**

7100. SHRI SATCHIDANANDA:
SHRI SUSHILKUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE:
SHRI RAJUBAHI A. PARMAR:
SMT. VEENA VERMA:

Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether the Nepalese Prime Minister, during his recent visit to New Delhi, proposed a system of record keeping to monitor the movement of people across the open Indo-Nepal border, as a step towards passport machanism; and

(b) if so, the details of the proposal and Governments reaction therto?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI R.L. BHATIA): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

**स्वतंत्रता सेनानी की अस्थियों को स्वदेश लाया जाना**

7101. श्री राघवजी: क्या विदेश मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) यह सच है कि प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा की अस्थियां अभी भी विदेश में पड़ी हुई हैं; यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या इन अस्थियों को भारत लाने के लिए कोई प्रयास किए गए हैं; यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं और क्या निकट भविष्य में इसके लिए प्रयास किए जाएंगे?

**विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री आर॰ एल॰ भाटिया):** (क) जी, हां। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा जिनका निधन 1930 में हुआ था, की पत्नी की इच्छाओं के अनुसार श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा की अस्थियों को जेनेवा के नगरपालिका के अस्थिगृह में वर्ष 2038 तक के लिए रखा गया है।

(ख) और (ग) श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा समिति बंबई द्वारा किये गये अनुरोध पर भारत सरकार संबंधित स्विस प्राधिकारियों के संपर्क में है। स्विस प्राधिकारी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा की अस्थियों को भारत भेजने के